International Journal of Humanities and Arts
www.humanitiesjournals.net
Online ISSN: 2664-7702, Print ISSN: 2664-7699
Received: 02-10-2021, Accepted: 15-11-2021, Published: 25-11-2021
Volume 3, Issue 1, 2021, Page No. 51-54

दलित साहित्य में डॉ. अंबेडकर के सामाजिक और राजनीतिक विचार

[1]डॉ. गुरदीप कौर और [2]राज कुमार

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान विभाग, श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, देव नगर, दिल्ली, भारत

[2]पी-एच.डी. शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

DOI: https://dx.doi.org/10.33545/26647699.2021.v3.i1a.95

सारांश

डॉ. अंबेडकर के विचारों की अभिव्यक्ति, चाहे वह सामाजिक हो या राजनीतिक, दलित चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय इतिहास में आधुनिक काल क्रांतिकारी युग है, जिसमें दलित साहित्य ने ब्राह्मणवाद, सामंतवाद और जाति-व्यवस्था को चुनौती दी है। पारंपरिक जाति-व्यवस्था के विघटन के समय साहित्यकारों का दायित्व है कि वे समाज की कुरीतियों को उजागर करें और एक नई दिशा प्रदान करें। डॉ. अंबेडकर के विचारों से प्रेरित दलित साहित्य का उद्भव 1975 के बाद हुआ, जिसने हिंदी साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। इसमें दलितों के जीवन, उनकी पीड़ा, और सामाजिक-राजनीतिक न्याय की आवश्यकता की अभिव्यक्ति की गई है। डॉ. अंबेडकर ने दलितों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया, और उनकी शिक्षाएँ दलित साहित्य के लिए आधारभूत सिद्धांत बनीं। इस संदर्भ में, यह कहा जा सकता है कि आज का दलित साहित्य अंबेडकरवादी साहित्य है, जो समानता, बंधुता, और न्याय का संदेश देता है।

कूट शब्द: डॉ. अंबेडकर, दलित साहित्य, दलित चेतना, सामाजिक न्याय, राजनीतिक विचार, ब्राह्मणवाद

प्रस्तावना

डॉ. अंबेडकर के विचारों की अभिव्यक्ति चाहे वह सामाजिक हो या राजनीतिक, साहित्य में दलित चेतना को विस्तार देती है। भारतीय इतिहास में आधुनिक काल एक क्रांतिकारी युग हैं. राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, वैचारिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, क्रान्ति इसी युग की देन हैं। दलित साहित्य या अंबेडकरवादी साहित्य सम्पूर्ण ब्राह्मणवाद, सामन्तवाद और जाति-व्यवस्था को नकार देने वाला साहित्य भी इसी युग की ही देन हैं।

परंपरागत भारतीय समाज में जाति-व्यवस्था पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चलती आ रही है। समाज में सामाजिक व्यवस्था अव्यवस्थित होना शुरू होती है तब उसको एक व्यवस्थित रूप में बनाये रखना साहित्यकारों का मूल लक्ष्य है। साहित्य समाज का दर्पण है इसलिए साहित्यकारों का यह दायित्व बनता है की समाज में हो रही सभी गतिविधियो को अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को अवगत कराये और अपने साहित्य में सामाजिक कुरीतियों को यानी सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि सभी पहलुओं को कृतिबद्ध कर समाज को एक नई दिशा प्रदान करे। इसी प्रकार आधुनिक साहित्य के संदर्भ में दलित साहित्य का इन सभी लक्ष्यों को लेकर ही उद्भव होता है।

दलित साहित्य में 'दलित' शब्द की बात करे तो बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर के भाषण और ग्रन्थों में 'दलित' शब्दों का प्रयोग तो नहीं मिलता लेकिन फिर भी बाबा साहब ने इसके समानार्थ शब्दों का प्रयोग अपने ग्रंथो में किया हैं। जैसे- शेडयूल्ड कॉस्ट, शेडयूल्डट्राईब, डिनोटीफाईड हैं।

बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर ने इन शब्दों का प्रयोग अपने ग्रंथो में किया हैं, अस्पर्श्य पिछड़ा वर्ग घुमक्कड़ जाति और पददलित इन सारे शब्दों को समानार्थी माना जाता हैं। और उसका ही नया अर्थ आगे चलकर 'दलित' शब्द बना हैं। यह अंग्रेजी शब्द 'डिप्रेस्ड क्लासेज' एवं 'डाउनट्राडन' का हिन्दी अनुवाद के अर्थ में प्रयोग होता है।

दलित साहित्य वह साहित्य है। जिसमें दलितों की पीड़ा की अभिव्यक्ति हो और जिसकी आंतरिक

ऊर्जा में दलित चेतना का उभार हो। साहित्य में दलित चेतना का केन्द्र बिन्दु हजारों साल का उत्पीड़न, शोषण है और उससे मुक्त होने की कोशिश ही दलित चेतना है। दलित चेतना का सरोकार डॉ. डॉ. अंबेडकर के जीवन संघर्ष से जुड़ता है। इसलिए हम यूं भी कह सकते हैं कि जिस साहित्य में अम्बेडकरी विचार हो वही दलित साहित्य है। डॉ. अंबेडकर के विचार से विहीन साहित्य, भले ही वह किसी दलित लेखक ने लिखा हो दलित साहित्य नहीं हो सकता है। क्योंकि दलित साहित्य की आधार भूमि डॉ. अंबेडकर के सामाजिक और राजनैतिक विचारों की अभिव्यक्ति है। यदि कोई गैर दलित इस विचार के तहत अपनी रचनाधर्मिता की अभिव्यक्ति करता है तो उसे दलित साहित्य माना जा सकता है। लेकिन वह गैर दलित रचनाकार को जातीय भावना से मुक्त होना चाहिए। वर्ण-व्यवस्था में अटूट विश्वास रखने वाला कोई लेखक दलित साहित्य लिखेगा तो वह सिर्फ दिखावा ही होगा। और वह रचना सहानुभूतिपरक हो सकती है स्वानुभूतिपरक नहीं।

अंबेडकरवाद की द्वितीय मुक्ति श्रृंखला का आरम्भ सन् 1975 के बाद प्रारम्भ होता है। लेखकों में वर्ष1975 के बाद दलित चेतना की जो धारा विकसित हुई, वह इसलिए अपने में विशिष्ट है। कि उसने हिंदी जगत में अपनी पृथक और विशिष्ट पहचान बनायी। यह प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि अभी तक ऐसा प्रयास किसी युग में नहीं किया गया था। जिसे साहित्य जगत में उत्तरशती का दौर भी कहा जा सकता है। एक पृथक धारा के रूप में हिंदी दलित साहित्य इसी युग में अस्तित्व में आया। यही नहीं बल्कि उसे परिभाषित भी इसी काल में किया गया। यह धारा समग्र रूप में डॉ. अंबेडकर की सामाजिक और राजनैतिक न्याय और समानता की दृष्टि से ही विकसत हुई। इसमें कोई दो राय नहीं है कि डॉ. अंबेडकर-दर्शन में दलित-मुक्ति की अवधारणा की अभिव्यंजना ही वर्तमान हिंदी दलित साहित्य की सामाजिक और राजनैतिक चेतना की प्रतिबद्धता और अभिव्यक्ति है।

वर्तमान हिंदी दलित साहित्य इस अर्थ में भी विशिष्ट है, कि साहित्य की सभी विधाओं में उसका विकास हो रहा है। यद्यपि डॉ. अंबेडकर ने संस्थागत प्रयत्नों के माध्यम से दलितों के सामाजिक और राजनैतिक अधिकारों की बात की लेकिन सन् 70 के दशक के बाद कई संस्थायें सामने आती हैं, जिन्होंने अपने प्रयासों से दलितों के उत्थान पर कार्य किया। इस सन्दर्भ में दलित साहित्य प्रकाशन संस्थान, डॉ. अंबेडकर मिशन, दलित आर्गनाइजेशन, राष्ट्रीय दलित संघ, दलित राइटर्स फोरम, दलित साहित्य मंच, लोक कल्याण संस्थान आदि के माध्यम से दलितों की स्थिति सुधारने के सन्दर्भ में अनेक कार्य किए गए। इन दलित संस्थाओं ने जिन दो महत्वपूर्ण पक्षों की ओर ध्यान आकृष्ट कराया उनमें एक है। दलितों की सामाजिक स्थिति में सुधार और दूसरा दलितों के लिए आरक्षण की माँग। इस सन्दर्भ में भारतीय संविधान में संशोधन का भी प्रावधान किया गया और संस्थाओं में समाचार पत्रों, लेखों और गोष्ठियों का भी सहारा लिया जिसके माध्यम से दलितों को जागरूक और एकत्रित कर उनमें चेतना पैदा का कार्य किया गया।

दलित काव्य धारा की सामाजिक और राजनैतिक अभिव्यक्ति पहले मराठी दलित साहित्य और बाद में हिंदी में दलितों में होना प्रारंभ हुआ इसमे दलित समाज का नारकीय जीवन, और उनकी विषम परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से दिखाया गया था, दलित समाज में आभिजात वर्ग के जो अपमान झेले है उस पीड़ा की अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया। रसिक बिहारी मंजुल ने 'अंबेडकर अग्निशतक', 'अग्निकिरण', बाबु लाल सुमन ने 'अंबेडकर महाकाव्य', राजपाल सिहं राज ने 'अंबेडकर भजन्वाली' आदि कविताएं लिखीं।

डॉ. अंबेडकर के 'शिक्षित बनों', 'संगठित रहो' और 'संघर्ष करो' का नारा आधुनिक नवयुवकों सामाजिक और राजनैतिक रूप से मजबूत होने के लिए दिया था जिससे अस्सी और नब्बे के दशक में अनेक दलित कवियों ने कविताएँ लिखी। इसमें मनसा राम विद्रोही ने 'दलित पचास',मोहनदास नैमिशराय ने 'सफदर बयान' तथा 'आग और आन्दोलन',ओमप्रकाश बाल्मीकि ने 'सदियों का संताप', 'बस्स ! बहुत हो चुका', जयप्रकाश कर्दम ने 'मैं गुणगा नहीं था', डॉ. सी.बी. भारती ने 'आक्रोश' लखन सिंह ने 'सुनो ब्राह्मण' रमणिका गुप्ता ने 'अब हम मुर्ख नहीं बनेगे' डॉ. शांति यादव ने 'तोदुगी मौन', सूरजपाल चौहान ने 'प्रयास' आदि कविताएँ और कविता संग्रह प्रकाशित किए डॉ. एन.सिह ने 'दर्द के दस्तावेज' सम्पादित किया।

इसी प्रकार हिन्दी दलित साहित्य में कहानियों के माध्यम से भी डॉ. अंबेडकर के सामाजिक और राजनैतिक विचारों को गति प्रदान हुई है ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी संग्रह 'सलाम', 'घुसपैठिए', मोहनदास नैमिशराय की 'आवाजें', श्यौराज सिंह बेचैन की 'हाथ तो उग ही आते है', 'भरोसे की बहन', रजत रानी 'मीनू' की 'हम कौन है?', रत्नकुमार सांभरिया की 'एयरगन का घोड़ा', 'दलित समाज की कहानी', डॉ. सुशीला टाकभौरे, 'संघर्ष', 'टूटता वहम', 'अनुभूति के घेरे' डॉ. जयप्रकाश कर्दम की 'तलाश', अनीता भारती की 'एक थी कोटेवाली तथा अन्य कहानियाँ', रजनी तिलक की 'बेस्ट ऑफ करवाचौथ', रजनी दिसोदिया की 'चारपाई', कालीचरण सनेही की 'दलित दुनिया' आदि दर्जनों कहानी संग्रह की अहम भूमिका रही है। इन सभी दलित कहानीकरों ने अपनी कहानियों के माध्यम से डॉ. अंबेडकर के विचारों समाज में फैलाने का कार्य किया और समाज में चेतना की गति को बल दिया है।

बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर ने अपने विचारों से सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन कर समाज में नयी दलित चेतना जागृत की है जिसने समाज में सदियों से चली आ रही अछूत समस्या, जातिभेद की मानसिकता और असमानता की भावना को लेकर चल रही ब्राह्मणवादी मानसिकता पर डॉ. अंबेडकर के विचारों ने संबल का काम किया हैं। कुछ हद तक यह युग दलित पत्रकारिता के लिए भी जाना जाता है, क्योंकि दलित साहित्य के साथ-साथ दलित पत्रकारिता का भी सशक्त विकास इस युग में हुआ है। दलित पत्रकारों में डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर, मोहन दास नैमिशराय, डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन', प्रेम कपाड़िया, मणिमाला, ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहर सिंह, बी.आर. बुद्धिप्रिय, सुरेश कानडे, डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव इत्यादि पत्रकारों ने दलित पत्रकारिता को प्रखर दलित प्रश्नों से जोड़कर विचारोत्तेजक और क्रांन्तिकारी बनाया है। इसलिए दलित चेतना के इस वर्तमान युग को दलित 'चेतना'युग का नाम भी दिया गया है।

बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर ने अपना समस्त जीवन दलित के हित के लिए ही न्यौछावर कर दिया हैं, उन्हीं के विचारों या सिद्धांतों के आधार से ही आज के दलित साहित्यकार कार्य तथा यथाशक्ति के अनुसार गति प्रदान कर रहे है।

बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर का कहना हैं-

एक स्वर्ण हमेशा एक स्वर्ण रहता हैं
एक अछूत हमेशा अछूत रहता हैं
एक ब्राह्मण हमेशा ब्राह्मण रहता हैं
एक भंगी हमेशा भंगी रहता हैं
वे ऊचें रहते हैं जो ऊचें पैदा होते हैं
भाग्य के कठोर नियम पर खड़ी हैं
यह व्यवस्था अपरिवर्तनीय।
इसलिए व्यक्ति की योग्यता निरथक हैं
नीतिवान अछूत भी नीचा हैं, हीन स्वर्ण से
धनवान अछूत भी नीचा हैं, धनहीन स्वर्ण से

बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर के अनुसार जो निम्न जाति में जन्म लेता हैं। चाहे वह धनवान क्यों ना हो या ज्ञानी, फिर भी वह दलित ही माना जाता हैं और उन पर लिखे गए साहित्य की ही दलित साहित्य माना जाना चाहिए।

हिंदी साहित्य में दलित-विमर्श अब मुख्यधारा के स्थापित विमर्श के रूप में स्वीकृत हो चुका हैं। दलित-साहित्य ने न केवल साहित्य के सैद्धांतिक व सौंदर्यशास्त्रीय प्रतिमानों में वांछित बदलाव ही नहीं किया है बल्कि रचनात्मकता के स्तर पर भी साहित्य को नया मार्ग दिखाया है। दलित रचनाशीलता अब एक ठोस हकीकत हैं जिसे यूं ही नकारा या खारिज नहीं किया जा सकता इसका पूर्ण श्रेय बाबा साहब डॉ. अंबेडकर को जाता है। जिनके अथक प्रयासों से समाज और दलित साहित्य में एक नव चेतना की भूमि तैयार हुई हैं।

दलित-साहित्य के प्रारंभिक वर्षो में हिंदी के कई दलित लेखकों ने दलित साहित्य की सैद्धांतिक अवधारणाओं को दिशाबद्ध करने का प्रयास किया है। जिसमे ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन', प्रेम कपाड़िया, बाबुराव बागुल, रत्नकुमार सांभरिया, हंसराज 'सुमन' कुसुम वियोगी, जयप्रकाश कर्दम, रजत रानी 'मीनू' कालीचरण 'सनेही' सोहनपल सुमनक्षर, सुराजपाल चौहान रमणिका गुप्ता, राजेन्द्र यादव, रजनी दिसोदिया, सुशीला टाकभौरे अनीता भारती, रजनी तिलक, आदि जैसे लेखक इनमे प्रमुख हैं। इन लोगों ने अंबेडकर की वैचारिक विरासत को दलित साहित्य की केन्द्रीय प्रेरणा बताया और स्वतंत्रता, समानता, और बन्धुत्व के व्यापक लोकतांत्रिक विचार को दलित-साहित्य का मार्गदर्शक सिद्धांत बताया हैं।

दलित साहित्य और अंबेडकरवादी साहित्य में कोई ज्यादा फर्क नहीं हैं। जिस समय 'दलित साहित्य' शब्द का प्रयोग किया जा रहा था। उस समय 'अंबेडकर साहित्य' संज्ञा का भी प्रयोग किया जा रहा था, इसलिए दोनों साहित्य के समावेश से ही दलित विमर्श को गति प्रदान हुई। इसके साथ ही मानव मुक्ति को पुरिस्कृत करने वाला, अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने वाला, स्वातंत्र्य, समता-बन्धुता का प्रचार करने वाला, जो सर्व जन हिताय सर्व जन सुखाय हैं, जो समाज में नव चेतना का सशक्त माध्यम बना हैं।

डॉ. अंबेडकर के जीवन संघर्ष और उनके साहित्य तथा दर्शन को देखने से पता चलता हैं कि दलितों का उनसे बढ़कर कोई हमदर्द नहीं था उन्होंने जिस वर्ग की लड़ाई अपने हाथों में ली थी। जो पिछले हजार वर्षों से अधिक समय से सोया हुआ था। उस समाज को बाबा साहब ने जगाने का काम किया था। डॉ. अंबेडकर का अटूट विश्वास था कि शिक्षा के द्वारा ही उपेक्षित एवं शोषित वर्ग प्रगति एवं उन्नति में सहभागी हो सकता हैं। जन-जागृति की दिशा में सामाजिक क्रांति के लिए डॉ. अंबेडकर ने अपना चिंतन और साहित्य के माध्यम से कालजयी प्रभाव अंकित किया, जिसे हम सब भारतीयों के लिए जरुरी हैं। यदि दलित साहित्य में डॉ. अंबेडकर की शिक्षायों का वर्णन न किया जाए। तो यह साहित्य अधूरा रहेगा। डॉ. अंबेडकर ने जाति आधारित सामाजिक-व्यवस्था ढाचें का विरोध करने के लिए विरोध के उपदेश दिए और यही गुण दलित लेखकों के लिए एक जिवंत प्रेरणा स्रोत हैं।

निष्कर्ष

दलित साहित्य में डॉ अंबेडकर के सामाजिक और राजनैतिक विचारों का अध्ययन करने के उपरांत यह कहा जा सकता है कि बाबा साहब ने अपने साहित्य में समाज के उन शोषित, वंचित, और उपेक्षित लोगों के विषय को प्राथमिकता दी जो सदियों से सामंती और जातिवादी-व्यवस्था के शोषण और उत्पीड़न का शिकार होता रहा डॉ. अंबेडकर दलितों के सामाजिक, राजनैतिक हिस्सेदारी की वकालत करते थे अततः हम यह कह सकते है कि आज का दलित साहित्य अंबेडकरवादी साहित्य है। और यह साहित्य अंबेडकर के दर्शन से प्रभावित है जो समाज में समानता, बंधुता, और न्याय की बात करता है।

संदर्भ सूची

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, मुख्यधारा और दलित साहित्य, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली. 2009.
2. हाशिये से बाहर, डॉ रजत रानी मीनू, श्री साहित्यिक संस्थान, गाजियाबाद. 2001
3. डॉ. सिंह. एन, दलित साहित्य के प्रतिमान, दिल्ली, वाणी प्रकाशन. 2012
4. वसुधा-58, जुलाई-सितम्बर 2003, डॉ. शरण कुमार लिम्बाले, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र
5. वाल्मीकि, ओम प्रकाश, दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन. 2011
6. डॉ. लिंबाले, शरणकुमार, दलित साहित्य वेदना और विद्रोह, दिल्ली, वाणी प्रकाशन. 2010
7. डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर, डॉ. अम्बेडकर चिंतन और विचार, जगतराम एंड संस प्रकाशक, मेन रोड गांधी नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण. 2017
8. कृष्णदत्त पालीवाल, डॉ. अंबेडकर समाज-व्यवस्था और दलित-साहित्य, प्रकाशक-किताब घर, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली संस्करण. 2010
9. साक्षान्त मस्के, परम्परागत वर्ण-व्यवस्था और दलित साहित्य,वाणी प्रकाशन,दिल्ली. 2009
10. साहित्य और संस्कृति में दलित अस्मिता की पहचान के सवाल: मोहन नैमिशराय, नया पथ, अंक 24-25, जुलाई-सितम्बर 1977
11. हिन्दी कहानियों में दलित चेतना (लेख): सुरेन्द्र प्रसाद, युद्धरत आम आदमी, अंक 90, जनवरी-मार्च 2008
12. दलित अस्मिता का विमर्श (लेख): ज्ञानेन्द्र कुमार, शब्द योग, सितम्बर 2009